

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, धर्मशास्त्र, सत्र 1, सांस्कृतिक संदर्भ

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा धर्मशास्त्र या ईश्वर पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 1, सांस्कृतिक संदर्भ है।

ईश्वर के सिद्धांत के बारे में बात करने से पहले, आइए हम ईश्वर की खोज करें।

दयालु पिता, हम पवित्र आत्मा की शक्ति में आपके पुत्र के माध्यम से आपके समक्ष आते हैं और आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हमें आशीर्वाद दें, हमें सिखाएं, हमें प्रोत्साहित करें, हमें अनन्त मार्ग पर ले चलें, हम यीशु के नाम में प्रार्थना करते हैं, आमीन।

ईश्वर के सिद्धांत से ज़्यादा मौलिक कोई सिद्धांत नहीं है। आप तर्क दे सकते हैं कि धर्मग्रंथों का सिद्धांत ज़्यादा मौलिक है, और वास्तव में, मैं इसे चुनौती नहीं दूंगा, लेकिन ईश्वर का सिद्धांत एक बहुत ही मौलिक सिद्धांत है, क्या हम कह सकते हैं।

आधुनिक त्रुटियों के संदर्भ में, बहुत सी बातें परमेश्वर के कथित प्रेम पर अत्यधिक जोर देने और उसकी पवित्रता या न्याय को कम आंकने पर आधारित हैं, उदाहरण के लिए। सकारात्मक पक्ष पर, हमें यह सोचने के लिए समय देना चाहिए कि परमेश्वर कौन है, यह तथ्य कि परमेश्वर पवित्र त्रिमूर्ति के रूप में अनंत काल से विद्यमान है, और उसके पास गुण और विशेषताएँ हैं। उसने हमें अपनी छवि में बनाया है और हम उसके कुछ गुणों को साझा करते हैं, अन्य को हम बिल्कुल भी साझा नहीं करते हैं, लेकिन परमेश्वर के गुणों या विशेषताओं के बारे में सोचना और उन पर ध्यान देना सार्थक है।

अंत में, हम आशा करते हैं, हम ईश्वर के कार्यों, उनकी सृष्टि और विधान के कार्यों को प्राप्त करने की योजना बनाते हैं, केवल मोचन और पूर्णता के उल्लेख के साथ, क्योंकि वे अन्य पाठ्यक्रमों के भविष्यवक्ता हैं। तो, आइए हम आधुनिक और उत्तर-आधुनिक संस्कृति से निपटने वाले एक परिचय से शुरू करें, हम कहाँ हैं, और हमें ईश्वर के सिद्धांत को बेहतर ढंग से कैसे समझना चाहिए। मैं डेविड वेल्स का ऋणी हूँ, जिन्होंने संस्कृति को संबोधित करने और संस्कृति में अपने वचन के माध्यम से ईश्वर को सुनने की आवश्यकता और क्रूस पर चढ़ाए गए और जी उठे और फिर से आने वाले मसीह के बारे में संदेश के इस क्षेत्र में अपनी पाँचवीं पुस्तक में, डेविड वेल्स की पाँचवीं पुस्तक है गॉड इन द व्हर्ल्विंड, गॉड इन द व्हर्ल्विंड, वास्तविकता का केंद्र, वे कहते हैं।

तो, बाइबल में ईश्वर के बारे में दी गई शिक्षाओं को समझने की कोशिश में सबसे पहली चुनौती हमारी संस्कृति से जुड़ी है। एंथनी थिसलटन ने द टू होराइजन्स नामक एक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी है। बाइबल के पाठ का क्षितिज है, व्याख्याकार का क्षितिज है।

सच कहूँ तो, मैंने अपने पूरे करियर में पहले वाले पर ज़ोर दिया है, लेकिन जो लोग ईसाई सत्य के बेहतरीन संचारक हैं, मैं जॉन स्टॉट और डेविड वेल्स के बारे में सोचता हूँ, जो दोनों दृष्टिकोणों को मिलाते हैं, निश्चित रूप से ईश्वर के वचन पर ज़ोर देते हैं लेकिन ईश्वर के वचन को प्रभावित करने, संस्कृति में समझे जाने और संस्कृति में रहने वालों को प्रभावित करने के लिए सिखाते हैं, क्योंकि हम हैं, और सुसंस्कृत हैं, हम ऐसा करने से नहीं बच सकते। वेल्स लिखते हैं, पहली चुनौती हमारी संस्कृति से जुड़ी है। ऐसा कैसे हो सकता है कि हमारी संस्कृति ईश्वर को जानने के हमारे रास्ते में आ जाए जैसा कि उसने खुद को प्रकट किया है? आइए शास्त्र के आधारभूत सत्य से शुरू करें।

यह है कि ईश्वर हमारे सामने खड़ा है। वह हमें खुद से बाहर आने और उसे जानने के लिए बुलाता है। यह सबसे गहरा सत्य है जिसका हम कभी सामना करते हैं, या मुझे कहना चाहिए, सबसे गहरा सत्य जिससे हम सामना करते हैं।

वेल्स एक कैल्विनिस्ट हैं। और यह कई अन्य सत्यों की कुंजी है, और फिर भी हमारी संस्कृति हमें बिल्कुल विपरीत पैटर्न में धकेल रही है। हमारी संस्कृति कहती है कि हमें ईश्वर को जानने के लिए खुद में जाना चाहिए।

यह एक सांस्कृतिक प्रश्न है जिसे हमें समझना शुरू करना चाहिए क्योंकि अन्यथा, यह इस बात को आकार देगा कि हम शास्त्र कैसे पढ़ते हैं, हम ईश्वर को कैसे देखते हैं, हम उनके पास कैसे जाते हैं, और हम उनसे क्या चाहते हैं। तो चलिए शुरू करते हैं। वास्तविक विश्वास, यानी बाइबिल के प्रकार का विश्वास, हमेशा से ही व्यक्तिपरक पक्ष रहा है।

यह सवाल ही नहीं उठता। जब हम सुसमाचार सुनते हैं, तो हमें ही प्रतिक्रिया देनी चाहिए। हमें ही पश्चाताप करना चाहिए और विश्वास करना चाहिए।

यह पवित्र आत्मा ही है जो हमारे भीतर अलौकिक रूप से काम करता है ताकि हमें पुनर्जीवित करे, हमें नया जीवन दे जहाँ केवल मृत्यु थी, परमेश्वर और उसके सत्य के लिए नई इच्छाएँ, जहाँ पहले कोई नहीं थी, हमें मसीह की मृत्यु से जोड़े ताकि हमें पुत्रों का दर्जा मिल सके। और न केवल दर्जा बल्कि परमेश्वर के बच्चे होने का अनुभव भी। पॉल ने घोषणा की है कि हमें पुत्रों के रूप में गोद लेने की आत्मा मिली है, जिसके द्वारा हम पुकारते हैं, अब्बा, पिता।

आत्मा स्वयं हमारी आत्माओं के साथ गवाही देती है कि हम परमेश्वर की संतान हैं। यह सब, ज़ाहिर है, आंतरिक है। और इस संबंध में, यह व्यक्तिपरक है।

यह हमारी आत्मा की गहराई में घटित होता है, और यह हम सभी को अपने में समाहित कर लेता है। जब मैं कहता हूँ कि ईश्वर हमारे सामने खड़ा है और हमें अपने से बाहर आकर उसे जानने के लिए बुलाता है, तो इन सत्यों पर किसी भी तरह से संदेह नहीं किया जा रहा है। लेकिन यह कहने का क्या मतलब है कि ईश्वर हमारे सामने खड़ा है? कि वह, एक तरह से, हमारे लिए वस्तुनिष्ठ है? खैर, कहते हैं, आइए ईसाई धर्म से कुछ दूरी से शुरू करें और धीरे-धीरे उस केंद्र की ओर बढ़ें, जहाँ हम वास्तव में होना चाहते हैं।

इस दौरान, हम इस बारे में सोचेंगे कि इस दबाव भरी, भरी हुई, समृद्ध, वैश्विक संस्कृति में हमारा अनुभव किस तरह से हमारी समझ को आकार देता है कि ईश्वर कौन है और हम उससे क्या उम्मीद करते हैं। ईश्वर कहीं बाहर है। यह कहना कि ईश्वर हमारे सामने है, एक असाधारण कथन की तरह लगेगा।

जब कुछ लोग ये शब्द सुनते हैं, तो वे शायद यही सोचते होंगे कि ईश्वर का अस्तित्व है और वह हमारी दुनिया में है। पश्चिम में, ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करने वालों की संख्या आमतौर पर 90-97% के बीच रही है। 90-97.

हालांकि, 2013 में प्यू स्टडी में केवल 80% अमेरिकियों ने खुद को इस श्रेणी में रखा। फिर भी, जब नए नास्तिकता को मानने वाले लोग ईश्वर के अस्तित्व में इस विश्वास का मज़ाक उड़ाते हैं, तो उनके अनुसार यह एक भ्रम है, जैसा कि रिचर्ड डॉकिन्स कहते हैं, एक कालभ्रम, जैसा कि पीटर स्टीवन पिंगर घोषित करते हैं, स्टीवन पिंगर घोषित करते हैं, और केवल कल्पनाओं का एक समूह है, सैम हैरिस कहते हैं, वे खुद को हमारी सभी पश्चिमी संस्कृतियों में मुख्यधारा से बाहर पाते हैं। इसके अलावा, पश्चिम में लगभग 80% लोग खुद को आध्यात्मिक भी मानते हैं, उद्धरण चिह्नों में।

उल्लेखनीय रूप से, यह यूरोप में भी सच है, जहाँ धर्मनिरपेक्षता की प्रक्रियाएँ बहुत लंबे समय से बहुत गहराई से चल रही हैं। लेकिन ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास के बारे में पूछने का असली सवाल यह है। उस विश्वास का क्या महत्व है? अमेरिकी कांग्रेस ने 1956 में हमारे कागजी मुद्रा पर ये शब्द रखे थे, ईश्वर में हम विश्वास करते हैं।

लेकिन यह भी स्पष्ट है कि कई लोगों के लिए यह विश्वास थोड़ा कमज़ोर है और उनके वास्तविक जीवन से बहुत दूर है। वे ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करते हैं, लेकिन यह विश्वास बहुत ज़्यादा नकद मूल्य का नहीं है। इसलिए यह कहना कि ईश्वर उनसे पहले है, कुछ हद तक निरर्थक होगा।

यह जरूरी नहीं है कि यह परिभाषित करने के लिए वजन हो कि वे जीवन के बारे में कैसे सोचते हैं और कैसे जीते हैं। वास्तव में, हमारे समय के परिभाषित चिह्नों में से एक, कम से कम यहाँ पश्चिम में, व्यावहारिक नास्तिकता है जो बहुत से लोगों के लिए सच है। वे कहते हैं कि ईश्वर है, लेकिन फिर वे ऐसे जीते हैं जैसे कि वह है ही नहीं।

पॉल फ्राइज़ और क्रिस्टोफर बेडर ने अपनी किताब अमेरिका के चार देवताओं में दिखाया है कि एक व्यक्ति ईश्वर के बारे में क्या सोचता है और ईश्वर हमारे बारे में क्या कहता है, यह दो अन्य सवालों के उनके जवाबों से तय होता है। पहला, क्या ईश्वर कभी जीवन में हस्तक्षेप करता है? दूसरा, क्या ईश्वर कभी हमारे कामों और बातों के बारे में नैतिक निर्णय लेता है? अगर हम इन दोनों सवालों का जवाब हाँ में देते हैं, तो यह कहना कि ईश्वर हमारे सामने है, इसका मतलब बिल्कुल अलग होगा, जो इन सवालों के नकारात्मक जवाब देने से होगा। अगर हम सोचते हैं कि ईश्वर का जीवन के प्रति कोई हस्तक्षेप नहीं है, तो हम ईश्वर की उपस्थिति के बारे में कैसे सोचते हैं, यह एक बात होगी।

अगर हम सोचते हैं कि उनका दृष्टिकोण व्यावहारिक है, तो यह सोचना बिलकुल अलग बात होगी कि उनकी मौजूदगी का क्या मतलब है। तो क्या हमें उन्हें एक मकान मालिक के रूप में सोचना चाहिए जो इमारत की मरम्मत करवाता है लेकिन वहाँ रहने वालों के जीवन में हस्तक्षेप नहीं करता? क्या हमें उन्हें एक चीयरलीडर के रूप में सोचना चाहिए जो किनारे से चिल्लाकर प्रोत्साहन देता है लेकिन खुद खेल में शामिल नहीं होता? या एक चिकित्सक जो हमेशा रोगी के साथ एक दूरी का रिश्ता बनाए रखता है ताकि विश्लेषण उस व्यक्ति द्वारा पक्षपातपूर्ण न हो जो जानता है कि अंत में, रोगी को ही अपना जहाज सही करना है? क्या हमें ईश्वर को गैर-न्यायिक के रूप में सोचना चाहिए, जो अपने विचारों को अपने तक ही सीमित रखता है? यह एक ऐसी दिशा है जिसमें हमारी संस्कृति हमें धकेल रही है। ईश्वर हस्तक्षेप नहीं करता।

वह प्रेम का ईश्वर है और वह न्याय करने वाला नहीं है। यहाँ दूसरा पहलू यह है कि ईश्वर हमारी कमज़ोरियों और असफलताओं के बारे में कितना परवाह करता है। वास्तव में, वह कितना जानता है और वह विभिन्न असफलताओं को कितना महत्व देता है? हमारा दिन ऐसा है जिसमें दुनिया के बारे में, इसके युद्धों, त्रासदियों, पीड़ाओं और घृणाओं के बारे में जानकारी तात्कालिक और एक साथ मिलती है।

हम टीवी और इंटरनेट के ज़रिए हर उस महत्वपूर्ण चीज़ के बारे में जान रहे हैं जो हो रही है। और बहुत सी ऐसी चीज़ें भी जो पूरी तरह से महत्वहीन हैं। इससे हमारे मन में कुछ दिलचस्प सवाल उठते हैं।

दुनिया में अक्सर होने वाली क्रूरताओं को देखते हुए, क्या भगवान वास्तव में हमारी निजी, तुलनात्मक रूप से छोटी-मोटी गलतियों की परवाह करते हैं? क्या वे यहाँ-वहाँ धोखे के एक छोटे से क्षण से नाराज हो जाते हैं, जब हम बस शर्मिंदगी से बचने की कोशिश कर रहे होते हैं? अगर कोई दुर्भावना न हो तो झूठ बोलना इतना भयानक है? एक यौन कमजोरी के बारे में क्या, जिसका हम विरोध नहीं कर सकते? या थोड़ा आत्म-प्रचार जो तथ्यों से दूर हो जाता है? क्या वे इन निजी असफलताओं के बारे में सोचते हैं? क्या वे वास्तव में परवाह करते हैं? या वे बड़े और उदार हैं, और क्या वे उन चीज़ों को अनदेखा करते हैं जिन्हें बदलने में हम असमर्थ हैं? क्या वे हमें दोषी ठहराने की तुलना में हमें प्रोत्साहित करने में अधिक व्यस्त नहीं हैं? यह भी, वह जगह है जहाँ हमारी संस्कृति हमें ले जाना चाहती है। हम चर्च में भी इस सांस्कृतिक सोच को प्रतिध्वनित होते हुए सुनते हैं। अमेरिका के सबसे बड़े चर्च ऑडियंस के पादरी जोएल ओस्टीन, दुनिया भर में उनके 200 मिलियन अनुयायियों का उल्लेख नहीं करते, हमें हर हफ्ते इसी रास्ते पर ले जाते हैं।

उनके मीठे-मीठे विचारों में, ईश्वर हमारा सबसे बड़ा सहायक है, जो दुख की बात है कि निराश है कि वह हमें और अधिक स्वास्थ्य, धन, खुशी और आत्म-संतुष्टि नहीं दे सकता। इसका कारण बस इतना है कि हमने इन चीज़ों को लेने के लिए अपने हाथ नहीं बढ़ाए हैं। ईश्वर वास्तव में चाहता है कि हम उन्हें पाएँ।

अगर हमारे पास ये नहीं हैं, तो ठीक है, दोष हमारा है। दरअसल, ओस्टीन का संदेश आज के समय में ज़्यादातर अमेरिकी किशोरों के ईश्वर के बारे में सोचने के तरीके से बहुत अलग नहीं है।

अपने आत्म-खोज में, क्रिश्चियन स्मिथ ने हमें हमारे किशोरों पर किए गए एक बड़े अध्ययन का फल दिया है।

इसे 2005 में रिलीज़ किया गया था। इस अध्ययन में सबसे ज़्यादा चौंकाने वाली बात स्मिथ का निष्कर्ष है कि इनमें से ज़्यादातर किशोरों में ईश्वर के बारे में दृष्टिकोण प्रबल है। वे इसे नैतिकतावादी, उपचारात्मक ईश्वरवाद कहते हैं।

इंजीलवादी किशोरों के बीच भी, प्रमुख दृष्टिकोण यह है कि भगवान ने सब कुछ बनाया और एक नैतिक व्यवस्था स्थापित की, लेकिन वह हस्तक्षेप नहीं करता। वास्तव में, अधिकांश के लिए, वह त्रित्ववादी भी नहीं है। मसीह का अवतार और पुनरुत्थान चर्च के किशोरों की सोच में बहुत कम भूमिका निभाता है, यहाँ तक कि इंजीलवादी किशोरों की सोच में भी।

वे मानते हैं कि ईश्वर उनसे ज़्यादा कुछ नहीं मांगता क्योंकि वह मुख्य रूप से उनकी समस्याओं को सुलझाने और उन्हें अच्छा महसूस कराने में लगा हुआ है। धर्म का मतलब है खुशी, संतुष्टि का अनुभव करना, ईश्वर से अपनी समस्याओं का समाधान करवाना और घर, इंटरनेट, आईपॉड, आईपैड और आईफोन जैसी चीज़ें मुहैया करवाना। आधुनिक संस्कृति में ईश्वर के बारे में यह एक व्यापक दृष्टिकोण है, न केवल किशोरों के बीच, बल्कि कई वयस्कों के बीच भी।

यह ईश्वर के बारे में पश्चिमी संदर्भों में सबसे आम दृष्टिकोण है। ये शानदार शानदार तकनीक के संदर्भ हैं; पूंजीवाद द्वारा उत्पन्न प्रचुरता, हमारे पास मौजूद अवसरों की विशाल श्रृंखला, टूथपेस्ट से लेकर यात्रा तक हर चीज़ में अंतहीन विकल्प, और यह तथ्य कि अब हम उस पूरी दुनिया के बारे में जानते हैं जिसमें हम जुड़े हुए हैं। ये सभी कारक हमारे अनुभव में आपस में जुड़े हुए हैं और हमारे सोचने के तरीके में अजीबोगरीब चीज़ें करते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने स्पष्ट रूप से ईश्वर के बारे में हमारी सोच को अजीब बना दिया है। वास्तव में, रॉस डौथैट ने अपने बैड रिलिजन में इसे एक व्यापक पाखंड के रूप में वर्णित किया है जो अब अमेरिका में फैल चुका है। वह बिल्कुल सही है कि अधिकांश लोग पाखंड के बारे में इस तरह से नहीं सोचते।

हालाँकि, बहुत से अमेरिकी लोग ईश्वर के बारे में जो सोचते हैं, वह सत्य का विरूपण है। विरूपण के रूप में, यह वास्तविक चीज़ का विकल्प है। इसलिए यह विधर्मी है।

तो, लोग ऐसा क्यों सोच रहे हैं? मुझे इस सवाल का जवाब देने की कोशिश करनी चाहिए जो निस्संदेह एक बहुत ही जटिल सवाल है। फिर से, मैं इस सांस्कृतिक विश्लेषण के लिए डेविड वेल्स का आभारी हूँ, जो स्पष्ट रूप से मेरा क्षेत्र नहीं है। लेकिन मुझे इसकी ज़रूरत है।

एक विरोधाभास। इस संदर्भ में, इस अत्यधिक आधुनिक दुनिया ने वह पैदा किया है जिसे डेविड मायर्स अमेरिकी विरोधाभास कहते हैं। वास्तव में, यह विरोधाभास केवल अमेरिकी नहीं है।

यह पूरे पश्चिम में पाया जाता है। और तेजी से, यह पश्चिम के बाहर भी देखा जा रहा है। उदाहरण के लिए, एशिया के समृद्ध भागों में भी यही बात स्पष्ट हो रही है।

और यह विरोधाभास स्वाभाविक रूप से ईश्वर के बारे में प्रमुख दृष्टिकोण की ओर ले जाता है। तो, विरोधाभास क्या है? यह है कि हमारे पास कभी इतना कुछ नहीं था, और फिर भी हमारे पास कभी इतना कम नहीं था। हमारे पास कभी भी अधिक विकल्प, अधिक आसानी से सुलभ शिक्षा, अधिक स्वतंत्रता, अधिक समृद्धि, अधिक परिष्कृत उपकरण, अधिक कारें, बेहतर घर, अधिक आराम या बेहतर स्वास्थ्य सेवा नहीं थी।

यह विरोधाभास का एक पहलू है। लेकिन दूसरा पहलू यह है कि हर पैमाने पर अवसाद पहले से कहीं ज़्यादा प्रचलित है, चिंता पहले से कहीं ज़्यादा है, या भ्रम पहले से कहीं ज़्यादा व्यापक है। हम अपनी शादी को बहुत अच्छी तरह से संभाल नहीं पा रहे हैं।

हमारे बच्चे पहले से कहीं ज़्यादा हतोत्साहित हैं। हमारे किशोर अब तक की सबसे ज़्यादा दर पर आत्महत्या कर रहे हैं। हम ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को जेल में डाल रहे हैं, और सहवास पहले से कहीं ज़्यादा व्यापक है।

वास्तव में, 2012 में, अमेरिका में 53% बच्चे विवाहेतर संबंधों से पैदा हुए थे। यह नया मानदंड निश्चित रूप से उन बच्चों में से बहुत से बच्चों के लिए गरीबी का पूर्वानुमान है। यह विरोधाभास पूरी तरह से नया नहीं है।

1830 के दशक में जब फ्रांसीसी एलेक्सिस डी टोकेविले अमेरिका आए, तो उन्होंने देखा कि हालांकि बहुत से लोग संपन्न हो गए थे, लेकिन उनमें एक अजीब सी उदासी भी थी। राजनीतिक स्तर पर वे एक-दूसरे के बराबर हो गए थे। हालांकि, सामाजिक मोर्चे पर, लगभग हर कोई किसी ऐसे व्यक्ति को जानता था जिसके पास उनसे ज़्यादा था।

राजनीतिक समानता ने धन और संपत्ति के मामले में समान परिणाम नहीं दिए। कम से कम, टोकेविले ने उस उदासी को इस तरह से समझाया जो उसने देखी थी। क्या यह वास्तविक व्याख्या थी, यह वास्तव में महत्वपूर्ण नहीं है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि बहुतायत जरूरी नहीं कि एक बेदाग, बिना किसी शर्त के आशीर्वाद हो। बेशक, हमें यह जानना चाहिए क्योंकि यही बात यीशु ने बहुत समय पहले कही थी। हालांकि, आज, यह सांस्कृतिक विरोधाभास बहुत बढ़ गया है और हम सांस्कृतिक रूप से उस अमेरिका से काफी अलग जगह पर हैं जिसे टॉकविले ने लगभग दो शताब्दियों पहले देखा था।

कई चिकित्सक अब यह पा रहे हैं कि यह विरोधाभास उनके पास आने वाले लोगों के जीवन में भी घर कर गया है। इनमें से कई युवा हैं। वे अक्सर रिपोर्ट करते हैं कि हालांकि वे अच्छे घरों में पले-बढ़े हैं, उनके पास वह सब कुछ है जो वे चाहते थे, उन्होंने कॉलेज में पढ़ाई की, शायद कार्यस्थल में भी प्रवेश किया, फिर भी वे अपने खालीपन को महसूस करके हैरान रह जाते हैं।

उनका आत्म-सम्मान ऊंचा है, लेकिन उनका आत्म-सम्मान खोखला है। उन्हें यह कहते हुए बड़ा किया गया कि वे जो चाहें बन सकते हैं, लेकिन उन्हें नहीं पता था कि वे क्या बनना चाहते हैं। वे दुखी हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि उनके दुखी होने का कोई कारण नहीं है।

वे इंटरनेट के ज़रिए ज़्यादा लोगों से जुड़े हुए हैं, और फिर भी उन्होंने कभी इतना अकेलापन महसूस नहीं किया। वे स्वीकार किए जाना चाहते हैं, और फिर भी वे अक्सर अलग-थलग महसूस करते हैं। हमारे पास कभी इतना कुछ नहीं था।

हमारे पास इतना कम कभी नहीं था। यही हमारा विरोधाभास है। यह दो-तरफा अनुभव शायद इस बात का सबसे अच्छा स्पष्टीकरण है कि इतने सारे लोग, किशोर और वयस्क, अब ईश्वर के बारे में कैसे सोच रहे हैं और वे उससे क्या चाहते हैं।

एक ओर, प्रचुरता का अनुभव, असीमित विकल्प, अवसर, समृद्धि के निरंतर बढ़ते स्तर, लगभग अनिवार्य रूप से अधिकार की भावना को जन्म देते हैं। हाल ही तक, प्रत्येक उत्तरवर्ती पीढ़ी ने यह मान लिया था कि वह पिछली पीढ़ी से बेहतर करेगी। प्रत्येक ने वहीं से शुरुआत की है, जहां पिछली पीढ़ी ने छोड़ा था।

यह अपेक्षा अवास्तविक नहीं रही है। चीजें इसी तरह से काम करती हैं। यह देखना मुश्किल नहीं है कि इस तरह का अधिकार स्वाभाविक रूप से ईश्वर और हमारे साथ उनके व्यवहार के प्रति हमारे दृष्टिकोण में कैसे परिलक्षित होता है।

यही वह बात है जो हमें उसे एक ऐसे चीयरलीडर के रूप में सोचने पर मजबूर करती है जो केवल हमारी सफलता चाहता है। वह एक प्रेरक प्रशिक्षक है, हमारे लिए अनंत समृद्धि का स्रोत है। वह हमारे अच्छे जीवन की खोज में कभी भी हमारे साथ हस्तक्षेप नहीं करेगा, जिसका अर्थ है जीवन में अच्छी चीजों की खोज।

हम उन्हें इन आशीर्वादों के कभी न खत्म होने वाले स्रोत के रूप में देखते हैं। वे हमारे द्वारपाल हैं। स्वास्थ्य और धन के सुसमाचार के प्रचारक, एक सुसमाचार, उद्धारण में, जिसे पश्चिम से दुनिया के अविकसित भागों में निर्यात किया जा रहा है, इस तथ्य से बिल्कुल अनजान प्रतीत होते हैं कि ईसाई धर्म के बारे में उनका दृष्टिकोण इस तरह के अनुभव पर आधारित है।

अगर उन्हें पश्चिमी चिकित्सा विशेषज्ञता और पश्चिमी समृद्धि का आनंद नहीं मिला होता, तो यह संदेहास्पद है कि वे सोच सकते थे कि ईसाई धर्म का मतलब सिर्फ स्वस्थ और समृद्ध होना है। कम से कम चर्च के इतिहास के लंबे, घुमावदार सफ़र में, हमने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं सुना है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस तथाकथित सुसमाचार के इन प्रचारकों ने जीवन में कुछ लक्ष्य निर्धारित कर लिए हैं।

मनचाही दौलत और उसका आनंद लेने के लिए पर्याप्त स्वास्थ्य प्राप्त करना। फिर आस्था उन्हें ईश्वर से ये चीजें पाने का हकदार बनाती है। जहाँ इस तरह की ईसाई धर्म का निर्यात किया गया

है, उदाहरण के लिए, अफ्रीका के कई देशों में, यह वही आस्था है जिसका विज्ञापन किया जा रहा है।

यह बिलकुल सच है। कुछ साल पहले, दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में हवाई अड्डे से निकलते समय, मैंने एक बिलबोर्ड देखा, जिस पर एक साधारण सवाल लिखा था। उसमें पूछा गया था, क्या आप अमीर बनना चाहते हैं? उस सवाल के नीचे एक टेलीफोन नंबर था, जिसके बारे में मुझे बताया गया कि यह स्वास्थ्य और धन मंत्रालय का है।

वास्तव में, कई अफ्रीकी शहरों में चमत्कार केंद्र हैं जहाँ पीड़ित लोग कीमत चुकाकर चमत्कार पाने के लिए जाते हैं। कम से कम उन्हें यह आश्वासन तो मिलता है कि चमत्कार हो सकता है। मंदिर के पैसे बदलने वालों ने यीशु को इतना क्रोधित कर दिया कि उसने उन्हें शारीरिक रूप से इमारत से बाहर निकाल दिया।

लेकिन हम स्वास्थ्य और धन आंदोलन में उनकी आधुनिक संतानों को अपने कदमों में ले लेते हैं। वे हमारे उपभोक्ता समाजों और हमारी अपेक्षाओं में घुलमिल जाते हैं कि ईश्वर हमारी सेवा में हमेशा मौजूद है। वे बस विशाल, फैले हुए इंजील साम्राज्य का हिस्सा हैं।

जबकि यह सच है कि हम आधुनिक लोगों को बहुतायत का अनुभव हुआ है, यह भी सच है, और यह विरोधाभास का दूसरा पहलू है, कि बहुतायत के हमारे अनुभव के साथ खालीपन और हानि का अनुभव भी होता है। हम अपने भीतर जीवन की कठोरता, काम पर निराशा, चोटिल और टूटे हुए रिश्ते, बिखरते परिवार, स्थायी दोस्ती को बनाए रखने में असमर्थता, इस दुनिया में अपनेपन की भावना की कमी और यह भावना रखते हैं कि यह खाली और शत्रुतापूर्ण है। इसलिए हम इन घावों से कुछ आंतरिक मरहम, कुछ राहत के लिए भगवान की ओर देखते हैं।

हम ईश्वर को अपने चिकित्सक के रूप में सोचने के लिए इच्छुक हो जाते हैं। यह आराम, उपचार और प्रेरणा है जो हम सबसे अधिक गहराई से चाहते हैं, इसलिए यही हम उनसे चाहते हैं। यही वह भी है जो हम चर्च के अनुभव से सबसे अधिक चाहते हैं। हम आराम देने वाले, उत्थान करने वाले, प्रेरक और मन को शांत करने वाले बनना चाहते हैं।

हम नहीं चाहते कि रविवार या शायद शनिवार की शाम एक और काम का दिन बन जाए, एक और बोझ, कुछ ऐसा जिसके लिए प्रयास और एकाग्रता की आवश्यकता हो। हमारे पास पहले से ही बहुत सारे बोझ और संघर्ष हैं, हमारे कार्य सप्ताह में ध्यान केंद्रित करने के लिए बहुत सारी चीजें हैं। सप्ताहांत में, हम राहत चाहते हैं।

यह देखना मुश्किल नहीं है कि इस दो-तरफा अनुभव, इस विरोधाभास ने ईश्वर के बारे में हमारी समझ को कैसे आकार दिया है। यह हमें ऐसे ईश्वर की चाहत देता है जो हमारे करीब आएगा, जो धीरे से चलेगा, जो कोमलता से स्पर्श करेगा, जो उत्थान करने, आराम का आश्वासन देने और मार्गदर्शन करने आएगा। हम चाहते हैं कि हमारा ईश्वर स्वीकार करने वाला और गैर-निर्णयात्मक हो।

यह हमें यह उम्मीद भी देता है कि किसी तरह से यह बहुतायत का भगवान हमें अपनी सबसे बड़ी और उदार खुराक देगा, शायद लॉटरी जीतने के माध्यम से भी। शायद हम पावरबॉल जीत सकते हैं, या शायद कुछ स्वीपस्टेक पुरस्कार जीत सकते हैं। हम ऐसे ही भगवान चाहते हैं।

हम उससे यही अपेक्षा करते हैं। ईश्वर हमारे भीतर ही गायब हो जाता है। फिर से, मैं डेविड वेल्स की पुस्तक गॉड इन द व्हर्लविंड से ये लंबे अंश पढ़ रहा हूँ, क्योंकि मुझे लगता है कि ये हमें यह समझने में मदद करने के लिए बहुत उपयुक्त है कि हम कहाँ हैं।

वे परमेश्वर के वचन की शिक्षा का विकल्प नहीं हैं, लेकिन वे हमें परमेश्वर के वचन की शिक्षा की आवश्यकता को समझने में मदद करते हैं। और हम खुद भी इनमें से किसी भी विचार से पूरी तरह सुरक्षित नहीं हैं। निश्चित रूप से हमारे परिवार और प्रियजन, बच्चे और नाती-नातिन, उदाहरण के लिए, हमारी संस्कृति के भीतर इनमें से कुछ धाराओं से प्रभावित हुए हैं।

ईश्वर हमारे भीतर ही गायब हो जाता है। जैसा कि हम तर्क देते रहे हैं, यह दृष्टिकोण संभवतः हमारे अनुभव से विकसित होता है। लेकिन हमारा अनुभव हमारे पश्चिमी समाजों के नीचे टेक्टोनिक प्लेटों के बदलाव से कम कुछ नहीं है।

यह कम से कम दो निकट से संबंधित बड़े बदलावों का अंतिम उत्पाद है जो कम से कम 1960 के दशक से हमारी संस्कृति में चल रहे हैं। वे पहले हैं कि हमारे दिमाग में, हम पुरानी नैतिक दुनिया से बाहर निकल गए हैं जिसमें ईश्वर पारलौकिक और पवित्र था, और हम एक नई मनोवैज्ञानिक दुनिया में प्रवेश कर चुके हैं जिसमें वह केवल आसन्न और प्रेमपूर्ण है। यह वह ढांचा है जिसके तहत हम अब सब कुछ समझते हैं।

इसका मतलब यह है कि हमारे अनुभव में निहित चीजों को देखने के हमारे तरीके में बदलाव अब हमारे सांस्कृतिक संदर्भ में पुष्टि किए जाएंगे। दूसरा, अब हम अपने बारे में मानव प्रकृति के संदर्भ में नहीं बल्कि स्वयं के संदर्भ में सोच रहे हैं। स्वयं बस अंतर्ज्ञान का एक आंतरिक केंद्र है।

यह वह स्थान है जहाँ हमारी अपनी अनूठी जीवनी, लिंग, जातीयता और जीवन के अनुभव सभी एक साथ आत्म-चेतना के एक केंद्र में आते हैं। और हर व्यक्ति अद्वितीय है क्योंकि किसी के पास व्यक्तिगत कारकों का बिल्कुल एक जैसा सेट नहीं होता है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि अब हम जीवन को यह समझने के लिए देखने के लिए इच्छुक हैं कि क्या सच है और सही और गलत के बारे में विशिष्ट व्यक्तिगत तरीकों से सोचना।

हममें से प्रत्येक का जीवन और उसके अर्थ के बारे में अपना-अपना दृष्टिकोण है और प्रत्येक दृष्टिकोण उतना ही वैध है जितना कि कोई अन्य दृष्टिकोण। और इनमें से कोई भी दृष्टिकोण पूर्ण नैतिक मानदंडों द्वारा निर्धारित नहीं है। यह वह जगह है जहाँ अधिकांश अमेरिकी रहते हैं।

इन बदलावों का वर्णन मैं अपनी पुस्तक ' लूज़िंग अवर वर्चु, व्हाई द चर्च मस्ट रिकवर इट्स मोरल विज़न ' में करने की कोशिश करता हूँ, जो डेविड वेल्स की पाँच महत्वपूर्ण पुस्तकों में से एक है। हालाँकि खोई हुई नैतिक दुनिया और नए स्व के उद्भव को अलग-अलग वर्णित किया जा सकता

है, लेकिन वास्तव में वे एक साथ होते हैं, और प्रत्येक एक दूसरे को बढ़ावा देता है। आइए हम इस पर संक्षेप में चर्चा करें।

60 के दशक में, जब ये सांस्कृतिक परिवर्तन चल रहे थे, तो वे काफी क्रांतिकारी लग रहे थे। यह विद्रोही नए वामपंथ के केंद्र में था। उस समय की प्रभावशाली किताबें, जैसे कि थियोडोर रोज़ज़क की द मेकिंग ऑफ़ ए काउंटरकल्चर और चार्ल्स रीच की द ग्रीनिंग ऑफ़ अमेरिका, ज्ञानोदय की तर्कसंगतता पर हमला थीं, जैसे कि ज्ञानोदय ने माना था, हमारा तर्क पूरी तरह से निष्पक्ष है।

लेकिन उस संदेश का दूसरा पहलू था, अपने अंतर्ज्ञान और अवस्थाओं के साथ स्वयं के साथ निरंतर व्यस्तता, और यह, निश्चित रूप से, लोगों पर संस्कृति के काम करने के तरीके के साथ-साथ चलता था। समय के साथ कट्टरपंथी नए वामपंथ में जो शुरू हुआ था, वह उत्तर-आधुनिक दुनिया की सामान्य धारणाओं में बदल गया। यह कट्टरता मुख्यधारा बन गई, और इसी से वह आया जिसे फिलिप रीफ ने मनोवैज्ञानिक मनुष्य कहा।

यह वह व्यक्ति है जो अपने से बाहर के सभी संदर्भ बिंदुओं से वंचित है। कोई नैतिक दुनिया नहीं है, कोई अंतिम अधिकार और गलत नहीं है और कोई भी ऐसा नहीं है जिसके प्रति वह जवाबदेह हो। इस व्यक्ति की अपनी आंतरिक वास्तविकता ही मायने रखती है और यह समुदाय के प्रति किसी भी दायित्व या अतीत की समझ या यहां तक कि बाहर से ईश्वर के हस्तक्षेप से अछूती है।

जिस आधार पर जीवन का निर्माण किया जा रहा है वह यह है कि स्वयं के बाहर ऐसा कुछ भी नहीं है जिस पर उनका निर्माण किया जा सके, और यह स्वयं केवल प्रसन्न होना चाहता है। इसे बचाए जाने का कोई कारण नहीं दिखता। यह एक उपचारात्मक देववाद है जिसकी नैतिकताएँ स्व-केंद्रित और स्व-निर्मित हैं।

1960 के दशक के बाद, इन सभी का वर्णन करने के लिए जो शब्द प्रचलन में आए, वे थे व्यक्तिवाद, आत्ममुग्धता, मी जनरेशन और कुंभ राशि का युग। यह पारलौकिक ध्यान और जीसस क्राइस्ट सुपरस्टार का समय था। यह टाइम वुल्फ के शानदार तीखे उपन्यास द बोनफायर ऑफ़ द वैनिटीज जैसी किताबों के लिए आधार प्रदान करेगा।

यह उपन्यास 1980 के दशक के न्यूयॉर्क को चार घटिया चरित्रों के माध्यम से दर्शाता है, जिनके पास अपने स्वार्थ से बढ़कर कुछ नहीं है और वास्तव में उनके पास अपने दिखावे के अलावा कोई और आत्म-स्वार्थ नहीं है। वे व्यर्थ और खोखले हैं। वे पोज़ और आत्म-प्रक्षेपण के संग्रह के अलावा कुछ नहीं हैं।

बाद में ओलिवर स्टोन की 1987 की फिल्म वॉल स्ट्रीट के समानांतर यह फिल्म बनी। इस फिल्म में वॉल स्ट्रीट के कुछ व्यापारियों के जीवन को दिखाया गया था जो पूरी तरह से लालच से प्रेरित थे और जो पूरी तरह से अनैतिक दुनिया में रहते थे। कुछ लोगों में, मैं पीढ़ी की नई चिकित्सीय व्यस्तता, निश्चित रूप से, चर्च में घुस जाएगी, हालांकि कम स्पष्ट और अधिक स्वच्छ संस्करणों में।

इस समय को याद करते हुए, वेड क्लार्क रूफ ने कहा कि बूमर पीढ़ी की एक खास पहचान धर्म के आंतरिक और बाहरी पहलुओं के बीच का अंतर था। यानी जिसे आत्मा और संस्था कहा जाता है, उसके बीच का अंतर। ईसाई धर्म के संस्थागत पहलू, चर्च को संदेह की दृष्टि से देखा जाने लगा।

इसके बजाय आंतरिक बातों पर भरोसा किया गया, न कि चर्च के सिद्धांत पर, जिसे दूसरों ने तैयार किया था, न कि चर्च के अधिकार पर, न ही किसी बाहरी अधिकार पर। बल्कि, यह निजी अंतर्ज्ञान है जिसमें ईश्वर पाया जाता है। बूमर्स अपनी निजी दुनिया में विश्वास करते थे और चर्च जो करता है और कहता है, उसमें अविश्वास करते थे।

दरअसल, यहीं वे बीज थे, जिन्होंने 1990 के दशक के अंत तक पूरे पश्चिम में लाखों लोगों को जन्म दिया, जो आध्यात्मिक तो थे, लेकिन धार्मिक नहीं थे। अमेरिका और यूरोप दोनों में, लगभग 80% लोग कहते हैं कि वे आध्यात्मिक थे, और जबकि इसमें ऐसे लोग भी शामिल थे जो धार्मिक भी थे, आध्यात्मिक लोगों में से कई ऐसे भी थे जो निश्चित रूप से सभी धर्मों के विरोधी थे। वे उन सिद्धांतों के विरोधी थे, जिन पर उन्हें विश्वास करने की अपेक्षा थी, उन नियमों के विरोधी थे, जिनका उन्हें पालन करना था, और उन चर्चों के विरोधी थे, जिनमें उन्हें जाना अपेक्षित था।

उन्होंने इनमें से प्रत्येक का विरोध किया। वे दूसरों द्वारा उन पर थोपी गई धार्मिक या सामाजिक अपेक्षाओं से बंधे नहीं थे। 1960 के दशक में शुरू हुए आवेग 1990 के दशक तक हावी हो गए थे, और निश्चित रूप से, टीवी और इंटरनेट ने इस प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया।

ऐसे बहुत से लोग हैं जो सप्ताह दर सप्ताह आध्यात्मिक उन्नति केवल अपने कमरे में या अपने कंप्यूटर से ही प्राप्त करते हैं। वे कभी चर्च नहीं जाते। वैसे, वे चर्च जाते हैं, लेकिन अपने तरीके से।

जब रूफ ने अपना विश्लेषण किया, तो उन्होंने इसे पीढ़ीगत आदत बताया। उन्होंने कहा कि बूमर्स ऐसे ही होते हैं। हालांकि, सच्चाई यह है कि यह दृष्टिकोण किसी एक पीढ़ी में व्यापक नहीं है।

बूमर्स, जेन एक्सर्स और फिर मिलेनियल्स का अनुसरण करने वालों की आदतें बिल्कुल एक जैसी थीं। किशोरों पर स्मिथ के अध्ययन में भी यही बात सामने आई। नहीं, यह पीढ़ीगत मामला नहीं है।

यह एक सांस्कृतिक मामला था और है। यह वही है जो उन लोगों के साथ हो रहा है जो एक अत्यधिक आधुनिक समाज के बीच रह रहे हैं। वे अमेरिकी विरोधाभास के बीच में हैं और वे इसके उत्तर-आधुनिक मूड और इसके समाधान दोनों का हिस्सा हैं।

यही वह ज़मीन थी जिस पर ओपरा ने अपना टीवी साम्राज्य खड़ा किया। हफ़्ते-दर-हफ़्ते उनके शो देखने वाले उनके अनुयायी अपने मन में इतने पारंपरिक थे कि वे पारंपरिक सोच रखते थे। हालाँकि, जिस पाइड पाइपर को वे फॉलो करते थे, वह वास्तव में ऐसा नहीं था।

उन्होंने एक ऐसे युग की शुरुआत की जब ईश्वर को स्वयं में पाया जाता है, जब मोक्ष केवल चिकित्सा के बारे में होता है, खुशी बस कोने में होती है, और उपभोग हर किसी का अधिकार होता है। और अगली बात, और ओपरा के बारे में अच्छी बात यह है कि वह खुद टोस्ट पर परिपूर्ण नहीं हैं। वह बहुत ही मानवीय है।

दर्दनाक ईमानदारी के क्षणों में उनकी सारी भ्रांतियाँ और कमियाँ उजागर हो जाती हैं। ऐसा लगता था जैसे वह अपनी निजी स्वीकारोक्ति में थीं, हालाँकि वह खुद को स्वीकार कर रही थीं, लेकिन पूरी दुनिया को सुनने का सौभाग्य मिला। ओपरा ने जो सांस्कृतिक दृष्टिकोण निकाले, वे निश्चित रूप से सिर्फ व्यक्तिगत संतुष्टि या धर्म से कहीं ज़्यादा प्रभावित करते थे।

रॉबर्ट निस्बेट ने अपनी पुस्तक ट्राइलाइट ऑफ़ अथॉरिटी में लिखा है कि किस तरह से इन दृष्टिकोणों ने पूरी राजनीतिक प्रक्रिया को कमजोर कर दिया है। उन्होंने कहा कि, हमारे आत्म-व्यस्तता, हमारे पूर्ण आत्म-केंद्रित होने के कारण, हम समुदाय के लिए जो महत्वपूर्ण है उससे हटकर केवल व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण चीज़ों की ओर चले जाते हैं। महत्वपूर्ण से लेकर क्षणभंगुर तक, दूसरों से लेकर खुद तक।

और इन चीज़ों के बारे में हमारी राष्ट्रीय बातचीत उन दिनों से बहुत दूर है जब लोग राष्ट्र की भलाई के बारे में सोचते थे। शायद इसका सार 1858 की सात बहु-घंटे की लिंकन-डगलस बहस थी, जिसे राष्ट्रीय स्तर पर न्यूज़प्रिंट द्वारा रिपोर्ट किया गया था जब गंभीर मुद्दों पर बहुत विस्तार से बहस की जाती थी। अब, हमारे राष्ट्रीय मुद्दों पर टीवी पर बहस होती है जब एक राष्ट्र तुच्छ बातों में खो जाता है, नील पोस्टमैन ने एम्यूजिंग आवरसेल्क्स टू डेथ में कहा, जब जीवन केवल मनोरंजन तक सीमित रह जाता है और हमारी प्रकृति की भलाई के बारे में सार्वजनिक चर्चा छोटे टीवी साउंडबाइट्स की बचकानी बातों में की जाती है, तब हमें सांस्कृतिक मृत्यु की पहली गंध मिल रही है।

अब इस बारे में बात करने का कोई तरीका नहीं है कि क्या अच्छा है और अब निजी स्वार्थ के अलावा किसी और अच्छे के बारे में बात करने की इच्छा नहीं है। एक राष्ट्र के जीवन में ऐसे समय आते हैं, जैसा कि गिनीज ने लिखा है, जब उसके लोग अपने ही राष्ट्र के संस्थापक सिद्धांतों के खिलाफ उठ खड़े होते हैं। यह अमेरिका में उन समयों में से एक है।

यह किसी भी आतंकवादी हमले से कहीं ज़्यादा खतरनाक है। वास्तव में, यह आज़ाद लोगों की आत्महत्या है, जैसा कि उन्होंने अपनी किताब के शीर्षक में लिखा है। क्यों? क्योंकि एक गणतंत्र को एक साथ रखने वाली चीज़ कभी भी सिर्फ संविधान और हमारे कानून नहीं रहे हैं।

जब मानव व्यवहार को नियंत्रित करने की बात आती है तो कानून एक बहुत ही कुंद साधन है। ऐसी कई चीज़ें हैं जो अनैतिक हैं लेकिन अवैध नहीं हैं। उदाहरण के लिए, ज़्यादातर झूठ बोलना अवैध नहीं है, लेकिन हमेशा अनैतिक होता है।

हमारे आपराधिक और नागरिक कानून हमारे व्यवहार को केवल कुछ हद तक नियंत्रित कर सकते हैं। बाकी काम सद्गुणों द्वारा किया जाता है, और यही वह चीज़ है जो इस आत्म-उन्मुख,

आत्म-उपभोग वाली संस्कृति में नष्ट हो रही है। यह वह अम्ल है जो राष्ट्र की नींव को खा रहा है, वस्तुनिष्ठ मूल्यों को नष्ट कर रहा है, पुरानी परंपराओं को उखाड़ रहा है, और लोगों को उद्देश्य की कोई स्पष्ट समझ नहीं दे रहा है, और वास्तव में, उनके अपने स्वार्थ के अलावा कोई उद्देश्य नहीं है।

उत्तर-आधुनिक सूर्य के तहत, हर किसी को वास्तविकता के अपने संस्करण का अधिकार है। जब ऐसा होता है, तो कोई भी संस्कृति अपने जीवन को नवीनीकृत करने की अपनी क्षमता खो देती है। अतीत की संस्कृति तब सतही सूत्रों में बदल जाती है जो हवा, तरंगों और हमारे अतीत, व्यक्ति-से-व्यक्ति, इंटरनेट पर तैरती रहती है।

इसे फिर से किच के रूप में परोसा जाता है, और हर कोई दिखावा करता है कि यह वही पुरानी चीज़ है जो पहले थी। ऐसा नहीं है। जब ऐसा होता है, तो हम अमेरिकी संस्कृति के अंतिम चरण में होते हैं, जैसा कि मॉरिस बर्मन तर्क देते हैं।

चीजें धुंधली हो जाती हैं। इस प्रवृत्ति को जीन-फ्रैंकोइस ल्योटार्ड ने अपनी पुस्तक द पोस्टमॉडर्न कल्चर में व्यक्त किया है। अपनी सारी फ्रेंच प्रचुरता, अपनी विचित्रता के साथ, यह अमेरिका में किताबों के हिसाब से अनुपयुक्त लगती थी।

लेकिन हम पहले ही इस राह पर आगे बढ़ चुके थे, शायद उसी फ्रांसीसी लेखक के साथ नहीं, लेकिन फिर भी उसी निष्कर्ष पर पहुंचे। 1990 के दशक में एक के बाद एक लेखक और एक के बाद एक फ़िल्मों ने मान लिया कि कोई स्वतंत्र वास्तविकता नहीं है, कोई वास्तविकता नहीं है। हममें से हर एक के पास जो है, वह समझ का एक निजी ढाँचा है, और ऐसे कोई तथ्य नहीं हैं जिन पर भरोसा किया जा सके।

तथ्य तभी अस्तित्व में आते हैं जब हम उन्हें अपनी निजी दुनिया में समझने लगते हैं। थॉमस कुहन, जिन्होंने वैज्ञानिक सिद्धांत-निर्माण के बारे में लिखा है, अब संस्कृति में जो कुछ भी हो रहा था, उसे समझने के लिए व्यापक रूप से उद्धृत किए जाने लगे। हर कोई प्रतिमान बदलावों के बारे में उतनी ही आसानी से बात करने लगा, जितनी आसानी से वे बर्गर और फ्राइज़ के बारे में बात करते थे।

तो ऐसा हुआ कि चीज़ों के बीच की सीमाएँ थोड़ी अस्पष्ट होने लगीं, फिर गायब हो गईं। अमेरिका इसके लिए तैयार था। जैसा कि जेम्स लिविंगस्टोन ने टिप्पणी की है, अमेरिकियों को इस रास्ते पर चलने के लिए कट्टरपंथियों के उकसावे की ज़रूरत नहीं थी।

ऐसी कई गिरती हुई सीमाएँ हैं जिनके बारे में हमें जागरूक होना चाहिए। आत्मा और शरीर के बीच का अंतर एक ऐसी सीमा थी जो 1960 के दशक के बाद धीरे-धीरे गायब हो गई क्योंकि हमारी संस्कृति ने अपना आत्म-परिवर्तन शुरू किया। हम जो कुछ भी हैं, यह मान लिया गया और फिर जोर दिया गया, वह सब पशु है।

हम जो कुछ भी हैं, वह सिर्फ़ हमारा शरीर है। हालाँकि, समस्या यह है कि इस नई दुनिया में, हम व्यक्तिगत वास्तविकता को खोजने के लिए संघर्ष करते हैं। हम हमेशा यह नहीं जानते कि अपनी व्यक्तिगत पहचान कैसे व्यक्त करें।

हम किसी ऐसी चीज की चाहत रखते हैं जो हमें बाकी सभी से अलग बनाए। थोड़ी-बहुत बाहरी सजावट, जैसे कि छेद और टैटू बनवाना, मदद करती है। दरअसल, यह सिर्फ़ टैटू नहीं था।

यह वह सब कुछ था जो कूल होने के साथ-साथ चलता था। वह सब कुछ जो किसी को एक अलग तरह का शरीर, अलग बनाता था। उस अंतर में, रहस्यमयी रूप में, और उस रहस्य में कुछ ऐसा जो, अच्छा, ओह इतना वांछनीय था।

जीवन का यही अर्थ है। लेकिन अगर हमारे और जानवरों के बीच का अंतर खत्म हो गया है, तो इससे अधिकारों के बारे में एक नई चर्चा शुरू होती है। आगे यही हुआ।

कुछ लोगों ने हमें ईमानदारी से आश्वासन दिया कि जानवर इंसानों से अलग नहीं हैं और उन्हें भी वही अधिकार दिए जाने चाहिए। यहां तक कि यह भी प्रस्ताव दिया गया है कि जानवरों को अपने अधिकारों को सुरक्षित रखने में मदद करने के लिए वकील होने चाहिए। हालाँकि अगर मैं ऐसा कहूँ तो कोई भी जानवर हमारे वकीलों के लायक नहीं है।

यह बहुत ही धिनौना है। सीमाओं का यह लोप केवल शरीर के संबंध में ही नहीं हुआ, बल्कि लिंग के संबंध में भी हुआ। लिंग का हेरफेर और उसका झुकाव समाज के किनारे पर, अन्य विचित्रताओं के बीच बना हुआ है।

लेकिन समलैंगिकता एक बिल्कुल अलग मामला है। समलैंगिकता को सांस्कृतिक रूप से काफ़ी स्वीकृति मिली है और यह स्वीकृति अब मुख्यधारा में भी है। वास्तव में, यह 2013 में राष्ट्रपति ओबामा के उद्घाटन भाषण के केंद्र में था।

समलैंगिकता के लिए व्यापक समर्थन होना अपने आप में महत्वपूर्ण है। लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि यह परिवार को फिर से परिभाषित करने के गहन, बहुआयामी प्रयास का केवल एक हिस्सा है। हम एक विशाल सामाजिक प्रयोग के बीच में हैं।

हम किसी भी समाज के सबसे बुनियादी ढांचे को फिर से परिभाषित कर रहे हैं। मार्क्सवादियों ने अपने समय की वर्ग व्यवस्था को फिर से डिजाइन करने की कोशिश की थी। वह प्रयास अब खंडहर में पड़ा है।

आज, कई पश्चिमी समाज अपने समाज के परिवारों के बारे में बुनियादी नियमों को फिर से लिखने के लिए समान रूप से साहसिक प्रयोग करने का प्रयास कर रहे हैं। हालाँकि, एक को संदेह है कि परिणाम बहुत अलग नहीं होंगे। जब ये सामाजिक प्रयोग विफल हो जाते हैं, तो वे अपने साथ बहुत अधिक भ्रम, अव्यवस्था और पीड़ा लेकर आते हैं।

लेकिन यह एकमात्र चीज़ नहीं है जो हम देख रहे हैं। एक बार जब हम खुद को जानवरों के अलावा कुछ और नहीं समझने लगते हैं, तो हमें यह स्पष्ट नहीं लगता कि हम वास्तव में केवल कंप्यूटर से अलग हैं। हम बस अपने डीएनए हैं जो विभिन्न आंतरिक तंत्रों के माध्यम से खुद को काम कर रहे हैं।

यह हमारी कुछ फिल्मों में व्यर्थ की सोच थी, जैसे कि पहले ब्लेड रनर और हाल ही में द मैट्रिक्स। यहाँ मुर्गी और अंडे की दुविधा है। पहले कौन आया? क्या हमने पहले सीमाओं को तोड़ा और पाया कि हमारे और ईश्वर के बीच की पुरानी सीमा भी खत्म हो गई है? या क्या वह सीमा पहले खत्म हो गई और एक बार जब वह खत्म हो गई, तो जीवन को फिर से कल्पित करना पड़ा? जो भी हुआ, बाहरी ईश्वर अब गायब हो गया है और उसकी जगह आंतरिक ईश्वर ने ले ली है।

पारलौकिकता को आसन्नता ने निगल लिया है। ईश्वर को केवल स्वयं के भीतर ही पाया जा सकता है। एक बार ऐसा हुआ, तो सही और गलत के बीच की सीमा, कम से कम जैसा कि हमने इन चीजों के बारे में सोचा था, गिरती हुई स्किटल्स की एक पंक्ति की तरह नीचे चली गई।

बुराई और मुक्ति को एक ही सिक्के के दो पहलू के रूप में देखा जाने लगा। जीवन में दो विकल्प नहीं। सच तो यह है कि जीवन की हर चीज़ को नए सिरे से परिभाषित और नए सिरे से कल्पित किया जा रहा है।

हालाँकि, खुद को और अपने समाज को अलग-अलग आधारों पर फिर से बनाने की यह कोशिश हमें एक मृत अंत की ओर ले जा रही है। सच तो यह है कि हम बहुत अच्छा नहीं कर रहे हैं। जब ईश्वर, बाहरी ईश्वर मर जाता है, तो आत्मा तुरंत खाली जगह को भरने के लिए आगे आती है।

लेकिन फिर कुछ अजीब होता है। आत्मा भी मर जाती है। और उसके साथ अर्थ और वास्तविकता भी चली जाती है।

जब ये चीज़ें खत्म हो जाती हैं, तो कुछ भी संभव है। हक्सले का डायस्टोपियन उपन्यास ब्रेव न्यू वर्ल्ड आखिरकार भविष्य में इतना दूर नहीं लगता। हम अब खुद को एक तेज़ गति वाली ट्रेन में सवार महसूस करते हैं जो पटरियों पर तेज़ी से दौड़ रही है।

और यह सोचना बेतुका है कि किनारे की तरफ झुककर और अपनी एड़ियाँ ज़मीन में गाड़कर हम ट्रेन की गति पर ज़रा सा भी असर डाल सकते हैं। लोग इसे महसूस करते हैं। कई लोग ऐसा करते हैं।

हमारी संस्कृति में घबराहट है क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा युग खत्म होने वाला है। हमारी डरावनी फिल्में सिर्फ़ कहानियाँ नहीं हैं। वे एक तरह से हमारा आईना हैं।

वे सतह पर आ जाते हैं। हमारे अंदर जो अपूर्ण भावना है - भय की भावना।

यह एहसास कि हमारी दुनिया में सब कुछ ठीक नहीं है। और बाहर एक ऐसा खतरा छिपा हुआ है जिसे हम देख नहीं सकते। हम सहज रूप से महसूस करते हैं कि हमारे ऊपर एक भयानक विपत्ति मंडरा रही है, लेकिन हम यह नहीं समझ पाते कि यह क्या है या यह कहाँ है।

हम कैसे हैं। अमेरिकी चर्च इस आधुनिक दुनिया का सामना करने में सबसे आगे है। हालाँकि, उसे इस जुड़ाव को कैसे प्रबंधित करना चाहिए, यह उसकी सबसे बड़ी दुविधा बन गई है।

और यह इसकी सबसे ज़रूरी चुनौती भी है। स्पष्ट रूप से, ईसाई धर्म को इस संदर्भ में ढालने का अक्सर प्रलोभन दिया गया है। इसके बजाय, वे उस संदर्भ का सामना करते हैं जहाँ इसकी आवश्यकता होती है।

जीवन का एक वैकल्पिक दृष्टिकोण बनने के बजाय, ईसाई धर्म अक्सर इस तरह के आधुनिक संस्कृति में जो कुछ हो रहा है, उसकी कई तरह से प्रतिध्वनि बन गया है। यीशु यह देखकर आश्चर्यचकित होंगे कि जब हमने खुद को संस्कृति के लिए प्रासंगिक बना लिया, तो परमेश्वर का राज्य कितना आसान हो गया। वास्तव में हमारे पश्चिमी समाजों में बहुत सारे परिवर्तन हो रहे हैं।

ईश्वर के बारे में महान विचार। हमारी दुनिया अपनी नींव तक हिल रही है। ईश्वर, वास्तविकता के अर्थ और सुसमाचार के बारे में महान विचार प्रस्तुत करने के बजाय, ऐसे इंजील चर्च हैं जो केवल छोटे-छोटे उपचारात्मक नुस्खे प्रस्तुत कर रहे हैं जो मीठे तो हैं लेकिन अधिकतर बेकार हैं।

यहाँ तक कि कोई यह भी सोच सकता है कि क्या कुछ मौजूदा चर्च की लड़कियाँ भी प्रतिरोध कर सकती हैं यदि उन्हें ऐसी ईसाई धर्म का सामना करना पड़े जो गहरा, महंगा और मांग वाला हो। इसलिए हमें अपने मूल सिद्धांतों पर वापस आना चाहिए। और इनमें से सबसे बुनियादी तथ्य यह है कि ईश्वर मौजूद है और वह हमारे लिए वस्तुनिष्ठ है।

वह हमारे अनुसार ढलने के लिए नहीं है। हमें उसके अनुसार ढलना होगा। वह हमें अपने से बाहर से बुलाता है ताकि हम उसे जान सकें।

हम उसे खोजने के लिए अपने भीतर नहीं जाते। हमें उसे उसकी शर्तों पर ही जानने के लिए बुलाया जाता है। वह हमारी शर्तों पर नहीं जाना जा सकता।

यह आह्वान उसके वचन में और उसके माध्यम से सुना जाता है। यह हमारे अंतर्ज्ञान के माध्यम से नहीं सुना जाता है। ये हमारे सबसे बुनियादी सिद्धांत हैं क्योंकि वे हमारे सबसे बुनियादी मुद्दों और हमारी सबसे बुनियादी पुकार से निपटते हैं।

यह आह्वान ईश्वर को जानने का है, जैसा कि उसने स्वयं को जाना है और जिस तरीके से उसने निर्धारित किया है। हमें इस आह्वान को उस ढाँचे के भीतर सुनना है जिसे उसने स्थापित किया है। वह हमारी सुविधा के लिए या केवल हमारे उपचार के लिए या केवल अपने बड़े बैंक से सामान बांटने वाले दिव्य टेलर के रूप में वहाँ नहीं है।

नहीं, हम यहाँ उसकी सेवा के लिए हैं। हम यहाँ उसे वैसे ही जानने के लिए हैं जैसे वह है, न कि जैसा हम उसे देखना चाहते हैं। स्थानीय चर्च ही वह स्थान है जहाँ हमें इसके बारे में सीखना चाहिए और परमेश्वर का वचन ही वह माध्यम है जिसके द्वारा हम ऐसा कर सकते हैं।

लेकिन हमें और आगे जाना चाहिए। यह जानना पर्याप्त नहीं है कि परमेश्वर ने हमें सत्य दिया है जो कि वहाँ जो है, उससे मेल खाता है, जो कि वहाँ है उससे मेल खाता है। इसके अतिरिक्त, यह परमेश्वर का वचन है जिसका उपयोग वह हमें व्यक्तिगत रूप से संबोधित करने के लिए करता है।

ऐसा करके, वह हमें खुद के बारे में जानने वाला बनाता है। वह हमारी परिस्थितियों से बाहर से आता है। वह हमारी व्यक्तिपरकता से सीमित नहीं है।

वह हम पर आक्रमण करने, हमें अपना बनाने और हमें अपनी महान मुक्ति योजनाओं में शामिल करने के लिए स्वतंत्र है, जो सदियों से चल रही हैं। पवित्र आत्मा आज हमें शास्त्र की सच्चाई फिर से बताता है और इसे ग्रहण करने के लिए हमारे मन और हृदय को खोलता है। इस प्रकार, हमें न केवल परमेश्वर और स्वयं के बारे में बल्कि स्वयं के बारे में भी एक दृष्टिकोण दिया जाता है।

और सिर्फ सही और सच्चा नज़रिया ही नहीं; हमें खुद परमेश्वर दिया गया है, जो पवित्र आत्मा के काम से अपने वचन के ज़रिए हमारे पास आता है। यह परमेश्वर ही है जो हमें खुद के बारे में जानने वाला बनाता है। परमेश्वर पवित्र प्रेम के रूप में।

तो फिर, परमेश्वर हमारे लिए इस अर्थ में वस्तुनिष्ठ है कि हम उसके सामने खड़े हैं। हम उसके सामने नरभक्षी हैं और उसकी पवित्रता की दुनिया में भी नरभक्षी हैं। हम उसे केवल इसलिए जानते हैं क्योंकि उसने हमें अपने बारे में ज्ञान की ओर खींचा है।

यूहन्ना लिखता है कि इसमें प्रेम है, यह नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, बल्कि इसमें कि उसने हमसे प्रेम किया और अपने पुत्र को हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए भेजा। 1 यूहन्ना 4.10 हम प्रेम करते हैं क्योंकि उसने पहले हमसे प्रेम किया। 1 यूहन्ना 4.19 जिस तरह से प्रेम को परिभाषित किया गया है और जो इसे अर्थ प्रदान करता है, वह मसीह की बलिदानपूर्ण, प्रतिस्थापन मृत्यु है।

यही वह है जो परमेश्वर के प्रेम को सर्वोच्च रूप से परिभाषित करता है। इसे लिया जाएगा; यह इस सप्ताह हमारे व्याख्यानो में से एक विषय है। प्रेम को परिभाषित करने वाला जॉन का वाक्य आज पश्चिम में बिल्कुल अलग तरीके से पूरा किया गया होता।

इसमें प्रेम है, बहुत से लोग कहेंगे कि जब हमें उसकी ज़रूरत होती है तो परमेश्वर हमारे लिए मौजूद होता है। वह हमारे लिए मौजूद है जो हमें उससे चाहिए। वह प्रेम है क्योंकि वह हमें आंतरिक आराम देता है और हमें अपने बारे में बेहतर महसूस कराता है।

वह प्रेम है क्योंकि वह हमें खुश करता है, वह हमें पूर्णता का एहसास देता है, वह हमें चीजें देता है, वह हमें ठीक करता है, वह हर दिन हमें प्रोत्साहित करने के लिए सब कुछ करता है। आज ईश्वर के बारे में यही प्रचलित दृष्टिकोण है। जब ओस्टीन यह सब दोहराता है, तो वह दिखाता है कि उसका सांस्कृतिक स्पर्श कितना सही है।

इसके विपरीत, बाइबल का दृष्टिकोण बिलकुल अलग है क्योंकि इसकी दुनिया नैतिक है। आज हमारी दुनिया गहरी, निरंतर और केवल उपचारात्मक है। बाइबल की दुनिया परमेश्वर के पवित्रता के चरित्र से परिभाषित होती है।

आज हमारा ऐसा नहीं है। यह मनोवैज्ञानिक है। यह ईश्वर के बीच का अंतर है, जो हमारे लिए वस्तुनिष्ठ है, और ईश्वर, जो इस अर्थ में व्यक्तिपरक है कि वह स्वयं में विलीन हो गया है।

यह एक ऐसा अंतर है जिसे हमें समझना होगा क्योंकि हम ईश्वर के सिद्धांत के बारे में सोचना शुरू करते हैं। जब उत्तरआधुनिकतावादी मनोवैज्ञानिक ढाँचे में जीवन के बारे में सोचते हैं, तो वे स्वयं के केंद्र से ऐसा करते हैं। यह स्वयं ही है जो यह निर्धारित करता है कि मोक्ष का क्या अर्थ है और जीवन का क्या अर्थ है।

जब हम परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए पवित्रशास्त्र के नैतिक ढाँचे के भीतर जीवन के बारे में सोचते हैं, तो हम परमेश्वर को इसका केंद्र मानकर इसके बारे में सोचते हैं। यह वह है जो अपनी पवित्रता में हमें जिस उद्धार की आवश्यकता है उसे परिभाषित करता है, और वह अपने प्रेम में वह प्रदान करता है जो हमें मसीह में चाहिए। उत्तरआधुनिक दृष्टिकोण में, हम जीवन के केंद्र में हैं।

बाइबल के अनुसार, हम नहीं हैं। यह परमेश्वर है जो जीवन का केंद्र है। अगर हम इन अंतरों को नहीं समझते हैं, तो हम तब असमंजस में पड़ जाएँगे जब हम यह सोचना शुरू करेंगे कि परमेश्वर ने वास्तव में खुद को कैसे प्रकट किया है।

प्रेम और पवित्रता के बीच के अंतरसंबंध को एक साथ बनाए रखना बहुत मुश्किल है। वास्तव में, कई लोग ऐसा करना अनुचित समझते हैं। पश्चिम में, हम इस विचार को बहुत पसंद करते हैं कि ईश्वर प्रेम है, लेकिन उसकी पवित्रता के विचार को अस्वीकार करते हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि यह आदिम अतीत का हिस्सा है, जिससे हम विकसित हुए हैं। हम वयस्क हो चुके हैं और अब ईश्वरीय निर्णय जैसी कठोर मिथकों पर विश्वास नहीं कर सकते। इसके विपरीत, अन्य संस्कृतियाँ हैं, खासकर जहाँ कट्टरपंथी इस्लाम मौजूद है, जो इस विचार को तुच्छ समझते हैं कि ईश्वर प्रेम है और उसे केवल पवित्र मानते हैं।

प्रेम को कोमल, पश्चिमी भावुकता का हिस्सा माना जाता है। इसका मतलब यह है कि उनके समाज में केवल कठोर कानून हैं, साथ ही गलत कामों के लिए बदला लेने और प्रतिशोध लेने के सभी तंत्र हैं। कोई क्षमा नहीं है।

हालाँकि, ईसाई धर्म प्रेम और पवित्रता को अनोखे ढंग से जोड़ता है, क्योंकि परमेश्वर के चरित्र में, वे हमेशा से एक साथ रहे हैं। हम यहाँ परमेश्वर के प्रेम और पवित्रता के बारे में सोच रहे हैं, जिसमें उसके चरित्र के कई पहलू शामिल हैं, जिनके बारे में शास्त्र में बताया गया है। पवित्र प्रेम शब्द पूरी तरह से संतोषजनक नहीं है।

यह शायद यह भी सुझाता है कि हम किस बात के खिलाफ़ बहस कर रहे हैं, कि प्रेम बुनियादी है और पवित्रता गौण है। लेकिन हमारा मतलब यह नहीं है। समस्या यह है कि अगर मैं पवित्र प्रेम का संक्षिप्त रूप इस्तेमाल नहीं कर सकता, तो हम अन्य बहुत कठिन अभिव्यक्तियों में फंस जाएँगे।

उदाहरण के लिए, ईश्वर की पवित्रता और ईश्वर का प्रेम एक दूसरे के साथ एकता में हैं। इसलिए, हम पवित्र प्रेम के साथ बने रहेंगे। आज, हमारी निरंतर प्रलोभन, जिसे हमारी संस्कृति द्वारा सहायता और बढ़ावा दिया जाता है, हाइफ़न को तोड़ना है।

हम ईश्वर का प्रेम चाहते हैं, उसकी पवित्रता के बिना। हम ऐसा इसलिए चाहते हैं क्योंकि हम अपनी निजी चिकित्सीय दुनिया में रहते हैं, जिसमें कोई पूर्ण नैतिक मानदंड नहीं है। इसलिए, ईश्वर की पवित्रता एक अप्रिय और अवांछित हस्तक्षेप बन जाती है।

हालाँकि, उनकी पवित्रता के बिना उनका प्रेम जीवन की उन चीज़ों में से एक है जो हमारे पास नहीं हो सकती। और वास्तव में, यह समझना हमारी सबसे बड़ी खुशियों में से एक बन जाएगा कि कैसे परमेश्वर पवित्र और प्रेममय दोनों है। बस।

बस। यह सांस्कृतिक, कुछ हद तक निराशाजनक परिचय हमें परमेश्वर को उसके वचन में खोजने और वास्तव में यह सीखने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है कि वह पवित्र प्रेम है और उससे भी कहीं अधिक है।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा धर्मशास्त्र या ईश्वर पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 1, सांस्कृतिक संदर्भ है।